मुझ में बने रहो

एक शिष्य की इच्छा–भाग 7

डॉ. डेविड प्लॉट

कृपया मेरे साथ अपनी अपनी बाइबल में गलातियों अध्याय 2 खोल लें। प्रार्थना करें कि मसीह ही हमारा सब कुछ हो।

"मेरे जीवन में परमेश्वर की इच्छा क्या है?" आज के मसीही विश्वासियों में यह एक सामान्य प्रश्न है। मेरे विचार में इसका एक कारण है कि हमें अनेक निर्णय लेने होते हैं और हमारे पास अनेक प्रश्न हैं जिनका उत्तर बाइबल में नहीं है और हम उलझन में पड़ जाते हैं। कुछ प्रश्न ऐसे होते हैं जो बड़े महत्त्व के नहीं जैसे, "मुझे कौन सी पुस्तक पढ़ना चाहिए?" या "मैं अपनी सन्तान के साथ अब क्या करुं?" या मेरी 16 वर्षीय सन्तान निराशा में है, मैं क्या करुं?" या "हम कहां खाना खाने जाएं? या क्या खाएं?" इन प्रश्नों के उत्तर बाइबल में नहीं हैं। तो हम क्या करें? ये तो छोटे प्रश्न हैं परन्तु कुछ महत्त्वपूर्ण प्रश्न भी होते हैं जैसे, "क्या मुझे कॉलेज पढ़ने जाना चाहिए?" यदि "हां" तो "कौन से कॉलेज में जाऊं?" "कौन सा विषय चुनूं?" क्या मैं किसी के साथ बाहर जाऊं? "क्या मुझे विवाह करना चाहिए?" "मुझे किसके साथ विवाह करना चाहिए?" "क्या हमें अभी बच्चे पैदा करने चाहिएं?" "हमें कितने बच्चे चाहिएं?" "क्या हमें बच्चा गोद लेना चाहिए?" हमारा अपना घर, पैसा, माता–पिता को साथ रखना, विवाह विच्छेद करना आदि अनेक प्रश्नों पर बाइबल स्पष्ट उत्तर नहीं देती है।

अतः अशुभ सन्देश यह है। अनेक विश्वासियों का प्रश्न बना रहता है, "मैं अपने जीवन में परमेश्वर की इच्छा को कैसे जानूं?" तब शुभ सन्देश यह है कि परमेश्वर की इच्छा कोई खोई हुई वस्तु नहीं है। हमें उसे खोजने की आवश्यकता नहीं है। अब यदि परमेश्वर की इच्छा गुप्त नहीं है जिसे हमें अनावृत करना है या परमेश्वर अपनी इच्छा हम पर प्रकट करना चाहता है या अपनी इच्छा प्रकट करने में परमेश्वर का मनोवेग हमारे द्वारा उसकी इच्छा जानने से कहीं अधिक है तो? यदि परमेश्वर की यह इच्छा है कि हम उसकी इच्छा जानने से अधिक उसका अनुभव करें तो? उसने अपना एकलौता पुत्र हमें दे दिया कि सुनिश्चित करें कि हम उसकी इच्छा पूरी करें। मेरी यह प्रार्थना है कि परमेश्वर हम में से हर एक के मन में यह स्थापित कर दे कि परमेश्वर का मनोवेग ऐसा है कि हम उसकी इच्छा पूरी करें । वह इसी के लिए हम में वास करता है।

हमने देखा है कि मसीह हम में वास करता है और वह हमारे जीवन के प्रत्येक पक्ष को प्रभावित करता है। वह हमारे मस्तिष्क को, हमारी भावनाओं को, हमारी देह को बदल देता है। हमने यह भी देखा कि हम अपनी देह को कैसे संभाले कि परमेश्वर को सम्मान मिले और अब देखेंगे कि मसीह हमारी इच्छा को कैसे प्रभावित करता है। अब यहां हमारे कार्य, हमारा विश्वास और हमारी पसन्द, और हमारे सोचने का प्रश्न आता है।

तो आइए हम गलातियों 2 का अध्ययन करें जहां हमारे दो वरिष्ठ अगुवे, पौलुस और पतरस आमने–सामने हैं; वहां वास्तव में समस्या क्या थी कि विश्वासियों मे एक दल यहूदियों का था जिसका मानना यह था कि विश्वास तो हमें मसीह में करना है परन्तु व्यवस्था के अनुसार हमें खतना भी करवाना है और भोजन में भी प्रतिबन्धों का पालन करना है। इस कारण अन्यजाति विश्वासी उलझन में थे कि क्या करना चाहिए।

पतरस वहां गया और अन्यजातियों के साथ भोजन करने बैठा परन्तु जब यहूदी विश्वासी आए तो वह अन्यजाति विश्वासियों से अलग हो गया। अतः प्रत्यक्ष था कि वह व्यवस्था पालन दर्शा रहा था जिससे अन्यजाति विश्वासियों को ऐसा प्रतीत हुआ कि वे उद्धार से रहित हैं। यहां पौलुस का यह पद अत्यधिक महत्त्वपूर्ण रत्न है जो हमें स्पष्ट कर देगा कि मसीह हम में वास करता है तो हमारा जीवन कैसा होता है। यह पद 20 है परन्तु भूमिका समझाने के लिए हमें पद 11 से आरंभ करना होगा।

गला. 2:11–21 "पर जब कैफा अन्ताकिया में आया, तो मैं ने उसके मुँह पर उसका सामना किया, क्योंकि वह दोषी ठहरा था। इसलिये कि याकूब की ओर से कुछ लोगों के आने से पहले वह अन्यजातियों के साथ खाया करता था, परन्तु जब वे आए तो खतना किए हुए लोागें के डर के मारे वह पीछे हट गया और किनारा करने लगा। उसके साथ शेष यहूदियों ने भी कपट किया, यहाँ तक कि बरनबास भी उनके कपट में पड़ गया। पर जब मैं ने देखा कि वे सुसमाचार की सच्चाई पर सीधी चाल नहीं चलते, तो मैं ने सब के सामने कैफा से कहा, "जब ते यहूदी होकर अन्यजातियों के समान चलता है और यहूदियों के समान नहीं तो तू अन्यजातियों को यहूदियों के समान चलने को क्यों कहता है?" हम तो जन्म से यहूदी हैं, और पापी अन्यजातियों में से नहीं। तौभी यह जानकर कि मनुष्य व्यवस्था के कामों से नहीं, पर केवल यीशु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा धर्मी ठहरता है, हम ने आप भी मसीह यीशु पर विश्वास किया कि हम व्यवस्था के कामों से नहीं, पर मसीह पर विश्वास करने से धर्मी ठहरें; इसलिये कि व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी धर्मी न ठहरेगा। हम जो मसीह में धर्मी ठहरना चाहते हैं, यदि आप ही पापी निकलें तो क्या मसीह पाप का सेवक है? कदापि नहीं क्योंकि जो कुछ मैं ने गिरा दिया यदि उसी को फिर बनाता हूँ, तो अपने आप को अपराधी ठहराता हूँ। मैं तो व्यवस्था के द्वारा व्यवस्था के लिये मर गया कि परमेश्वर के लिये जीऊँ। मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ, अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है; और मैं शरीर

में अब जो जीवित हूँ तो केवल उस विश्वास से जीवित हूँ जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिस ने मुझ से प्रेम किया और मेरे लिये अपने आप को दे दिया। मैं परमेश्वर के अनुग्रह को व्यर्थ नहीं ठहराता; क्योंकि यदि व्यवस्था के द्वारा धार्मिकता होती, तो मसीह का मरना व्यर्थ होता।"

कृपया पद 20 को रेखांकित कर लें, "मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ, अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है; और मैं शरीर में अब जो जीवित हूँ तो केवल उस विश्वास से जीवित हूँ जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिस ने मुझ से प्रेम किया और मेरे लिये अपने आप को दे दिया।" यह एक महान पद है जो हम में मसीह द्वारा लाया गया परिवर्तन दर्शाता है– हमारा आचरण और हमारी इच्छा। मैं चाहता हूं कि हम इस पद में निहित उन सत्यों को देखें जो समझने में हमारी सहायता करेंगे कि मसीह हमारी इच्छा को कैसे बदल देता है।

पहला सत्य, मसीह आपको नई पहचान देता है– पद 20, "अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है।" यह अंगीकार हम पौलुस के सब पत्रों में देखते हैं कि हम कैसे मसीह के साथ जुड़े हैं और मसीह का सब कुछ हमारा है। यह क्रूस पर केन्द्रित है। यही कारण है कि पौलुस गलातियों अध्याय 6 में कहता है, "मैं क्रूस पर अब घमण्ड करता हूं।" विचित्र बात है! आप कष्टदायक क्रूस पर कैसे घमण्ड करेंगे? वह क्रूस पर इसलिए घमण्ड करता है कि क्रूस पर एक महान कार्य हुआ। मैं चाहता हूं कि आप क्रूस के उस महान विनिमय पर और मसीह में हमारी एकता पर विचार करें। क्रूस पर क्या होता है? सबसे पहले, मैं अपने पाप क्रूस पर मसीह को देता हूं और वह मुझे अपनी धार्मिकता देता है। 2 कुरिन्थियों 5:21, "जो पाप से अज्ञात था उसी को उसने हमारे लिए पाप ठहराया कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं।" क्रूस पर हम यीशु को अपनी बुराईयां और अयोग्य अच्छाईयां आदि सब दे देते हैं। हमारे पश्चाताप के आंसू भी क्योंकि उन्हें उसके लहू में धुलना है, हमारा हर एक पाप हम उसे दे देते हैं और वह हमें बदले में क्या देता है? अपनी निष्कलंक धार्मिकता!

इसी कारण पौलुस फिलिप्पयों 3 में कहता है,–पद 7, "परन्तु जो बातें मेरे लाभ की थीं, उन्हीं को मैं ने मसीह के कारण हानि समझ लिया है। वरन् मैं अपने प्रभु यीशु मसीह की पहचान की उत्तमता के कारण सब बातों को हानि समझता हूं जिसके करण मैं ने सब वस्तुओं की हानि उठाई, और उन्हें कूड़ा समझता हूं, जिससे मैं मसीह को प्राप्त करूं और उसमें पाया जाऊं; न कि अपनी उस धार्मिकता के साथ जो व्यवस्था से है, वरन् उस धार्मिकता के साथ जो मसीह पर विश्वास करने के कारण है और परमश्वर की ओर से विश्वास करने पर मिलती है।" मैं क्रूस पर उसे अपने पाप देता हूं और वह मुझे अपनी धार्मिकता देता है। वह कुछ और भी करता है। वह मेरे दासत्व को लेकर मुझे स्वतंत्रता प्रदान करता है।

यहां जो भूमिका है, वह यह है कि मैं व्यवस्था का दास था, मैं अपने आप का दास था– शरीर का दास था। हम यह सब कुछ यीशु को क्रूस पर दे देते हैं और वह हमें स्वतंत्रता देता है कि हम परमेश्वर के लिए जीएं। पद 19 में पौलुस यही कह रहा है, "मैं तो व्यवस्था के द्वारा व्यवस्था के लिये मर गया कि परमेश्वर के लिये जीऊँ।" व्यवस्था अपने आप में बुरी नहीं है परन्तु मैं उसके पालन में खरा नहीं उतर सकता परन्तु एक मनुष्य है जो व्यवस्था पालन में खरा है। हम मसीह के द्वारा व्यवस्था का पालन खराई से कर सकते हैं। रोमियों 8:3 मे पौलुस कहता है, "क्योंकि जो काम व्यवस्था शरीर के कारण दुर्बल होकर न कर सकी, उस को परमेश्वर ने किया, अर्थात् अपने ही पुत्र को पापमय शरीर की समानता में और पापबलि होने के लिए भेजकर, शरीर में पाप पर दण्ड की आज्ञा दी।" वह हमें मसीह के द्वारा विजयी बनाता है।

चोथा, मैं क्रूस पर उसे अपने दण्ड दे देता हूं और वह बदले में मुझे दया देता है। रोमियों अध्याय 3, "कोई धर्मी नहीं एक भी नहीं।" अर्थात् हम सब परमेश्वर की दृष्टि में दण्ड के भागी हैं परन्तु याह की स्तुति हो कि उसने यीशु को भेजा की हमारा दण्ड अपने ऊपर ले ले। यही क्रूस का कार्य है। मैं उसे अपना दण्ड दे देता हूं और वह बदले में मुझे अपनी दया देता है।

अन्तिम बात, मैं उसे अपनी मृत्यु देता हूं और वह मुझे अपना जीवन देता है। रोमियों 6:5, "यदि हम उसकी समानता में उसके साथ जुट गए हैं, तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी जुट जाएंगे। हम जानते हैं कि यीशु मरकर जी उठा है और अब वह कभी नहीं मरेगा। मृत्यु उस पर प्रभुता नहीं रखती है। यीशु हमारी मृत्यु अर्थात हमारा पुराना मनुष्यत्व ले लेता है और हमें एक नई पहचान देता है।

में आपको स्मरण कराना चाहता हूं कि जब आप अपना जीवन मसीह से जोड़ देते हैं तब उसका सब कुछ–उसके अनुभव, उसकी मृत्यु, उसका जीवन, उसका स्वर्गारोहण सब कुछ आपका हो जाता है। आपकी संपूर्ण पहचान बदल जाती है। "मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं।" यह पौलुस की गर्वोक्ति है। क्यों? क्योंकि "अब मसीह मुझ में जीवित है।", यही क्रूस का महान विनिमय है। "तो डेव, क्या इसका अर्थ यह है कि हमारी अपनी इच्छा नहीं रही?" पौलुस के कहने का अर्थ यह नहीं है। पौलुस कह रहा है कि उसकी जो इच्छा है वह मसीह की इच्छा है क्योंकि उसका सब कुछ अब मसीह का है। मसीह के साथ एक होने का अर्थ यही है। मैं जो भी करता हूं वह मेरी ही इच्छा है परन्तु अब वह मसीह की है। कहने का अर्थ यह है कि अब मैं जो निर्णय अपने जीवन में लेता हूं वह वास्तव में मेरे नहीं मसीह के हैं। हम संकोच करते हैं, डरते हैं। क्यों? क्योंकि हम भूल जाते हैं कि हम अपनी इच्छा किसे समर्पित कर रहे हैं– मसीह को, परमेश्वर हमारे पिता को।

अब मान लो, पितागण कि आपके बच्चे आकर आपसे कहें, "पापा, हम ठीक वही करना चाहते हैं जो आप कहेंगे, उसके अतिरिक्त अपनी इच्छी नहीं करेंगे।" तो आप क्या करेंगे? क्या आप उनका जीवन दुश्वार कर

देंगे? कदापि नहीं। आप यहीं करेंगे कि उन्हें सही मार्गदर्शन दें, कि वे आप पर भरोसा करें। आप उन्हें वही निर्देश देंगे जो उनके लिए सबसे अधिक लाभ के हैं कि वे आपके प्रेम को समझें। यीशु ने तो स्पष्ट कह दिया कि जब हम संसारिक, अधर्मी जन अपनी संतान को अच्छी वस्तुएं दे सकते हैं तो हमारी स्वर्गीय पिता क्योंकर हमें भली वस्तुएं एवं पवित्र आत्मा न देगा? हमारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है और वह चूक नहीं करता, इसलिए उसे अपनी इच्छा समर्पित कर देता और उससे मार्गदर्शन खोजना क्या अति भला नहीं? केवल मसीह यीशु ही हमें इस योग्य बना सकता है कि हम उस सच्चे जीवन का अनुभव प्राप्त करें जो हमारे सृष्टिकर्ता ने हमें दिया है। परन्तु सत्य तो यह है कि हम वहां नहीं हैं।

यदि कोई हमसे कहे, "क्या आप मेरे लिए एक काम कर सकते हैं?" आप तुरन्त पूछेंगे, "कहिए मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं।" अर्थात आप तुरन्त तैयार हो गए। जब हम अपने मानवीय संबन्धों में ऐसे शिष्य हैं तो हम परमेश्वर के साथ क्यों भिन्न हैं? हमने अपना जीवन मसीह को दे दिया है, हम उसके साथ क्रूस पर चढ़ गए हैं। हम यह नहीं कह सकते, "मुझे पहले वचन पढ़ने दे कि क्या कहता है, तब मैं सोचूंगा कि करूं या न करूं।" हमें यहां सावधान रहना है। हम कलीसिया भी ऐसी ही चुनते हैं जहां हमारे मन की बात होती हो न कि बाइबल की। हम बाइबल से भी वही वचन अपनाते हैं जो हमारी समझ में अच्छे हैं अन्यथा वचनों को अनदेखा करते हैं। हमें यहां सावधान रहना है। मसीह ने हमें नई पहचान दी है जहां हमारी इच्छा उसकी इच्छा में लोप हो गई है। अपने जीवन का मार्ग हम स्वयं नहीं चुनते, मसीह चुनता है। मसीह ने हमें नई पहचान दी है।

दूसरा, मसीह हमें नया मार्गदर्शन देता है। यही हमारी सबसे बड़ी समस्या है। आप कहेंगे, "डेव, मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया जा चुका हूं। मसीह मुझ में अन्तर्वास करता है परन्तु मुझे बहुत से निर्णय लेने हैं। मैं क्या करूं?" आप मसीह पुस्तकों में परामर्श खोजते हैं। आप कुछ विश्वासियों से अगुआई खोजते हैं परन्तु आइए हम कुछ प्रचलित विधियां देखें। पहला, हम आंख बन्द करके बाइबल खोलते हैं और किसी पद पर उंगली रखते हैं। आप में से कितने ऐसा करते हैं? अब मान लो कि भजन 124:5 पर आपकी उंगली टिक गई। वहां लिखा है, "उमड़ते जल में हम उसी समय बह जाते।" यह आपके मन की बात नहीं है। अतः आप कहेंगे, "मुझसे ही कोई चूक हो गई है। मैं एक बार और देखता हूं।" और इस प्रकार आप कई बार करते हैं जब तक कि आपके मन की बात सामने न आए। मुझे विश्वास नहीं कि यह सफल विधि है।

मेरा एक मित्र किसी लड़की को पसन्द करता था परन्तु वह बार–बार इन्कार कर देती थी। अतः उसने यह विधि अपनाई और उसकी उंगली रोमियों 8:25 पर टिकी, "परन्तु जिस वस्तु को हम नहीं देखते, यदि उसकी आशा रखते हैं, तो धीरज से उसकी बाट जोहते भी हैं।" अन्ततः हुआ कि यह लड़की उसके लिए नहीं थी। ऐसे में हम वचनों को उनके संदर्भ से ही विलग कर देते हैं। यह विधि भी विश्वासयोग्य नहीं है।

अब दूसरी विधि, प्रभु का दर्शन जैसे मूसा को मिला, शाऊल (पौलुस) को मिला। यह तो बड़े सम्मान की बात है। क्या आपमें से किसी को ऐसा दर्शन मिला? तो यह विधि भी प्रयोगात्मक नहीं है।

तीसरी विधि, संयोगवश कुछ होना। मान लो आपकी नींद रात में खुलती है आप समय देखते हैं–2:22 दूसरी रात आपकी नींद फिर खुलती है, समय है 3:33, तीसरी रात आपकी नींद फिर खुलती है, समय है 4:44 आप चिन्ता करने लगते हैं। आप निष्कर्ष निकालते हैं कि परमेश्वर चाहता हे कि आप उस मकान में न रहें। आप अपनी पत्नी को अपना निर्णय सुनाते हैं तो वह चकित होकर पूछती है, "हम क्यों मकान बेच रहे हैं?" "मरे साथ प्रति रात ऐसा हो रहा है इसका अर्थ यही है कि परमेश्वर चाहता है कि हम इस मकान में न रहें। नहीं, परमेश्वर चाहता है कि आप नींद की गोली खाकर आराम से सोएं।"

अब आप अपने कॉलेज प्रवेश के बारे में सोच रहे हैं कि किस कॉलेज से आवेदन पत्र लाऊं। तभी अकस्मात आपकी भेंट किसी कॉलेज के विद्यार्थी से होती है तो आप सोचते हैं कि परमेश्वर उसे आपके मार्ग में इसलिए लाया कि आप भी उसी कॉलेज में प्रवेश लें जबकि परमेश्वर वास्तव में चाहता था कि आप किसी और कॉलेज में प्रवेश लें।

चौथी विधि, गिदोन की नाईं कुछ असामान्य घटना की अपेक्षा करें। परन्तु ध्यान रखें कि गिदोन का ऐसा करना उसके विश्वास की कमी प्रकट करता है क्योंकि उस पर तो परमेश्वर ने अपनी इच्छा स्पष्ट व्यक्त की थी।

पांचवी विधि, द्वार खुलना। जब परमेश्वर किसी काम के लिए द्वार खोलता है तो वह परमेश्वर की इच्छा है। देखिए 1 कुरिन्थियों 16:8, "मैं पिन्तेकुस्त तक इफिसुस में रहूंगा, क्योंकि मेरे लिए वहां एक बड़ा और उपयोगी द्वार खुला है..." यह समझदारी की बात है! अतः जब भी परमेश्वर द्वार खोलता है तो मेरे लिए वह परमेश्वर की इच्छा है परन्तु इसी के साथ 2 कुरिन्थियों 2:12 देखें, "जब मैं मसीह का सुसमाचार सुनाने को त्रोआस आया, और प्रभु ने मेरे लिये एक द्वार खोल दिया, तो मेरे मन में चैन न मिला, इसलिये कि मैं ने अपने भाई तीतुस को नहीं पाया; इसलिये उनसे विदा होकर मैं मकिदुनिया को चला गया।" इसका अर्थ यह हुआ कि परमेश्वर कोई अवसर प्रदान करे तो इसका अर्थ यह नहीं कि परमेश्वर चाहता है कि आप वही करें।

छठवीं विधि, बन्द द्वार। परमेश्वर द्वार बन्द कर दे तो आप प्रयास न करें। यह सही है परन्तु प्रेरितों के काम में पौलुस इफिसुस में है और वहां एक भविष्यद्वक्ता अपनी भविष्यद्वाणी द्वारा उसका यरुशलेम प्रस्थान का द्वार बन्द कर देता है कि वहां उसका बन्दीकरण एवं मृत्यु है परन्तु पौलुस कहता है कि आत्मा उसे वहां जाने के लिए बाध्य कर रहा था कि वह यरुशलेम जाए और वह गया। तो क्या हम बन्द द्वार में जा टकराएं? यह विधि खतरनाक हो सकती है। यह भी सफल नहीं है। बन्द द्वार के तीन अर्थ निकलते हैं: 1)

परमेश्वर नहीं चाहता कि आप वह काम करें। 2) परमेश्वर चाहता है कि आप दूसरा काम करें। 3) परमेश्वर आपकी परीक्षा ले रहा है कि आप उसमें कितनी गंभीरता से समर्पित हैं।

सांतवी विधि, छोटी सी आवाज़। 1 राजा 19– एलिय्याह भाग कर एक गुफा में छिप गया था। वहां भूकंप आया, आंधी आई, आग प्रकट हुई परन्तु परमेश्वर की वाणी बड़ी धीमी आवाज़ में उसे सुनाई दी। हमारे साथ समस्या यह है कि हम कैसे भी प्रयास कर लें, मनन करें, आंखे बन्द करें परन्तु हमें वह धीमी आवाज़ सुनाई नहीं देती है। जब हमें काई अति महत्त्वपूर्ण निर्णय लेना होता है तब हमारे मन में अनेक विचार उठते हैं और हम समझ नहीं पाते कि कौन सा विचार परमेश्वर की ओर से है। हम सोचते हैं कि हम शान्त बैठकर आंखें बन्द कर लें और जो विचार मन में आए वही परमेश्वर की वाणी है।

अब आप कहेंगे, "डेव, फिर हम कैसे पता लगाएं कि परमेश्वर क्या कहता है।" मैं मानता हूं कि परमश्वर भिन्न–भिन्न विधियों द्वारा हमसे बात करता है परन्तु इनसे हम परमेश्वर के संबन्ध में चूक जाते हैं।

मैं आपको विश्वास की विधि बताता हूं। आप कहेंगे, "डेव, आप विश्वास की बात कर रहे हैं। क्या यह इतना आसान है?" नये नियम में कहीं भी पुराने नियम की विधियों द्वारा परमेश्वर की इच्छा का प्रकाशन प्राप्त नहीं किया गया है। केवल एक बार उन्होंने चिट्ठियां डालकर यहूदा के स्थान पर नियुक्ति की थी परन्तु यह पवित्र आत्मा के आगमन के पूर्व की घटना है। अब पवित्र आत्मा अपने लोगों की अगुआई करता है। पौलुस गलातियों 2:20 मे कहता है, "मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं, अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है, और में शरीर में अब जो जीवित हूं तो केवल उस विश्वास से जीवित हूं जो परमेश्वर के पुत्र पर है।" हमारी मानसिकता यह है कि यहां आकर हम विश्वास को गिरा देते हैं।

इफिसियों 2:8 में लिखा है कि हम विश्वास के द्वारा अनुग्रह से उद्धार पाए हुए हैं। इसमें हमारा अपना प्रयास नहीं है परन्तु हम विश्वास को उद्धार के निमित्त अपना कार्य बना कर अपने विश्वास को पवित्र करते हैं। मैं आपको स्मरण कराना चाहता हूं कि अपने उद्धार का आचरण केवल विश्वास करने पर है। मसीह जीवन यह नहीं कि हम निर्णय लें कि मसीह के लिए कैसे जीएं। मसीही जीवन वास्तव में मसीह में भरोसा रखना है कि वह हम में जीए। यही हम अपने इन अध्ययनों में विचार करते आ रहे हैं।

अब इसे मेरे लिए परमेश्वर की इच्छा से संदर्भित करें। यह हमारा उत्तरदायित्व नहीं है कि परमेश्वर की इच्छा जानें और फिर उसके लिए वह काम करें। हमें पल प्रति पल, दिन प्रतिदिन निर्णय प्रति निर्णय अन्तर्वासी मसीह पर भरोसा रखना है कि वह हमारे द्वारा अपना जीवन जीए। यही पौलुस कह रहा है कि जिसने मेरे लिए अपने आप को दे दिया मुझे इतना प्रेम करता है कि अपना जीवन मेरे द्वारा जीता है।

अब हम परमेश्वर की इच्छा के विषय चर्चा करने में महत्त्वपूर्ण विचार पर आते हैंः परमेश्वर की इच्छा जानना परमेश्वर को जानने के बाद आता है। हमने जो विधियां देखीं वे आलस का काम है। उनमें

अनुशासन की आवश्यकता नहीं है। उनमें चरित्र परिवर्तन की आवश्यकता नहीं है। परमेश्वर ने अपनी इच्छा का प्रकटीकरण एक प्रक्रिया में रखा है जिसमें आप को उसे खोजना है और जब आप उसे जान लेते हैं और उसमें बने रहते हैं तब वह आपको इस योग्य बनाता है कि उसकी इच्छा जानकर उसे पूरा ही न करें वरन् उसका अनुभव भी लें।

परमेश्वर सामर्थी है कि निर्णय लेने में आपकी अगुआई करे। वह अब भी सामर्थी है कि आपको स्वप्न में बताए या दर्शन द्वारा प्रकट करे, "तुझे ठीक यही करना है।" परन्तु यदि उसने ऐसा नहीं करने का निर्णय लिया है तो उसका भी एक कारण है। संभवतः वह चाहता है कि आप उसे जानें, उस पर भरोसा करें, उससे सीखें, उस पर आश्रित हों और उसे इस अनुभव द्वारा आपको मसीह के स्वरूप में ढालने दें और सहायता करने दें कि आप समझें कि मसीह का आपमें अन्तर्वास का क्या अर्थ है और विधियों में विश्वास करने की अपेक्षा आप मसीह में विश्वास करें।

आप अति प्रसन्न होंगे यदि मैं परमेश्वर के वचन पर आधारित आपको सूत्र दे दूं कि आप अपना निर्णय लेने में परमेश्वर की इच्छा जान पाएं परन्तु मैं ऐसा करने योग्य नहीं हूं परन्तु हां, परमेश्वर के वचन पर आधारित मैं यह कह सकता हूं कि स्वर्ग में एक परमेश्वर है जो आपका उद्धार करने के लिए आपके पीछे आया, वह आज भी आपके पीछे है और वह चाहता है कि आप उसे व्यक्तिगत रूप से जानें। इसी कारण उसने मसीह को आपमें अन्तर्वास करने के लिए भेजा कि अपने को आप पर प्रकट करे जिससे कि आप उसकी इच्छा को केवल जानें ही नहीं; उसका अनुभव भी करें। परमेश्वर की इच्छा सड़कों का मानचित्र नहीं कि आपको बताए कि यह करो यह वह करो। उसकी इच्छा एक ऐसा संबन्ध है जिसमें मसीह आपकी इच्छा को अपनी इच्छा में विलय कर लेता है।

क्या आपने कभी ध्यान दिया है कि परमेश्वर हमें बिन्दू "ए" और बिन्दू "बी" के मध्य छोटा रास्ता नहीं दिखाता है। मैं जानता हूं कि आप में से अनेक इस बात पर "आमीन" कहेंगे परन्तु सत्य तो यही है कि परमेश्वर चाहता है कि आप उस पर भरोसा करना सीखें। वह चाहता है कि आप मसीह के स्वरूप में बढ़ते जाएं। परन्तु जब हमें शीघ्र ही कोई उत्तर चाहिए तो यह प्रोत्साहन नहीं है। सत्य तो यह है कि परमवर ने आपको इस स्थिति में अकेला नहीं छोड़ा है वह तो आपके साथ घनिष्ठ संबन्ध बनाना चाहता है। वह आपकी इच्छा को अपनी इच्छा में विलय करके आपके साथ एक होना चाहता है। उसने हमें इसी कारण अपना वचन दिया है और चाहता है कि हम उस में विश्वास करें। उसी में आपके जीवन के लिए उसकी अधिकांश इच्छा व्यक्त है। आप बाइबल का कोई भी भाग खोल लें और वहां परमश्वर की इच्छा व्यक्त की हुइ पाएंगे जो विश्वासयोग्य है। और एक बात उसकी इच्छा के लिए प्रार्थना करें। उसके वचन हमारे मन–मस्तिष्क पर छा जाते हैं और वह हमारी इच्छा को बदल देता है। मुझे यह बहुत अच्छा लगता है। 2

कुरिन्थियों 5:17 देखें, "कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है; पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, सब बातें नई हो गई हैं।" वह हमारी इच्छाओं और लालसाओं को लेकर हमारा मन बदल देता है और हम अन्तर्वासी मसीह के मनोवेग को समझने लगते हैं। भजन 37:4 में लिखा है, "यहोवा को अपने सुख का मूल जान, और वह तेरे मनोरथों को पूरा करेगा।" पौलुस का मनोरथ एक ही था कि सुसमाचार प्रचार करे। परमेश्वर ने उसे अनेक स्थानों में प्रचार करने से रोका परन्तु उसे गलत मार्ग पर जाने नहीं दिया।

हम परमेश्वर की इच्छा क्यों खोजते हैं? इसका एक कारण यह भी है कि हम गलत निर्णय न लें कि परेशानी और उलझन में न पड़ें। हम परमेश्वर से उसकी इच्छा तो पूछते हैं परन्तु उसकी इच्छा पूरी करने की हमारी इच्छा नहीं होती है। हम अपनी ही इच्छा पूरी करते हैं।

मैं बेपटिस्ट चर्च के पास्टर एड्रीयन रोजर्स का कथन दोहराना चाहता हूं जो मेरा अति प्रिय कथन है, "अपने जीवन के लिए परमेश्वर की इच्छा जानने के लिए अगले पन्द्रह मिनट उसकी इच्छा पूरी करें।" मैं यह जानता हूं कि मेरे जीवन में परमेश्वर की इच्छा है कि मैं शिष्य बनाऊं पर मैं यह नहीं जानता कि 5 वर्ष, 10 वर्ष, 20 वर्ष या 40 वर्ष पश्चात मैं कहां रहूंगा, जीवित भी रहूंगा या नहीं। परन्तु यदि मैं परमेवर से प्रार्थना करता हूं और उसकी इच्छा को इस समय पूरी करता हूं तो मैं आनेवाले समय में वहीं होऊंगा जहां परमेश्वर की इच्छा है कि मैं रहूं। आप उसकी इच्छा जानने की अपेक्षा वर्तमान में उसकी इच्छी पूरी करें वरन् वह तो चाहता है कि आप उसकी इच्छा ही बन जाएं।

ओसवाल्ड चेम्बर्स ने कहा, "परमेश्वर के साथ ऐसा संबन्ध रखें कि आपको उसकी इच्छा जानने की आवश्यकता ही न हो अर्थात अपने विश्वासी जीवन के अनुशासन के अन्तिम चरण पर पहुंच जाएं। परमेश्वर के साथ आपके उचित संबन्ध स्वतंत्रता और हर्ष के हैं, आप ही परमेश्वर की इच्छा हैं, आपकी बुद्धि ही उसकी इच्छा है जब तक कि वह आपको न रोके। आप परमेश्वर की मनभावन संगति में निर्णय लेते हैं और जब वह रोके तो तुरन्त रुक जाते हैं। यह वही बात हो गई जो यीशु ने यूहन्ना 15 में कहा "जो आज्ञा मैं तुम्हें देता हूं, यदि उसे मानो तो मेरे मित्र हो। अब से मैं तुम्हें दास न कहूंगा, क्योंकि दास नहीं जानता कि उसका स्वामी क्या करता है; परन्तु मैं ने तुम्हें मित्र कहा है, क्योंकि मैं ने जो बातें अपने पिता से सुनीं वे सब तुम्हें बता दी।"

अठारह महीने पूर्व मैं और मेरी पत्नी हेदर किसी महत्त्वपूर्ण निर्णय के लिए प्रार्थना कर रहे थे और हम पर घने बादल छाए हुए थे। हमें कुछ समझ नहीं आ रहा था कि क्या निर्णय लें। सब निर्णय परमेश्वर की इच्छा प्रतीत हो रहे थे। अतः हमने अन्त में परमेश्वर से कहा, "हम नहीं जानते क्या करें। तू ही हमारी इच्छा को लेकर चल।" और परमेश्वर ने ऐसा ही किया। उसने जहां जहां हमें अवसर दिया चाहे बाढ़ द्वारा

विस्थापित करके, हमने उसके वचन का वहां प्रचार किया अर्थात उसकी इच्छा को पूरा किया और इसी कार्य द्वारा परमेश्वर ने हमारी अगुआई की।

यहां शुभ सन्देश यह है कि जब हम सन्देह करें कि क्या हमारा यह निर्णय सही है तब 6 महीने पश्चात या एक वर्ष या डेढ़ वर्ष पश्चात जब भी आप अपने निर्णय के बारे में सोचें तो आप परमेश्वर के साथ अपने दृढ़ संबन्धों के बारें में सोचें और आप पाएंगे कि जगत के परमेश्वर ने आपको मझधार में नहीं छोड़ दिया था। यही सुरक्षित विधि है। हम में वास करनेवाले मसीह में भरोसा रखें कि वह हमारी अगुआई करेगा। यही मसीह द्वारा दिए गए मार्गदर्शन का सौंदर्य है।

मसीह हमें नई पहचान देता है, नया दिशानिर्देश देता है और वह हमें नया उद्देश्य देता है। गलातियों 2:20 में पौलुस पतरस को यही समझाना चाह रहा है कि वह अन्यजातियों में परमेश्वर के काम को समझने में चूक कर रहा है। पतरस अपने विश्वास के अनुरूप आचरण न करके प्रश्न की स्थिति उत्पन्न कर रहा था। हम परमेश्वर से पूछते हैं, "मेरे जीवन में तेरी इच्छा क्या है?" तो हम परमेश्वर को अपने स्वार्थ में बांधना चाहते हैं। क्या संपूर्ण जगत मेरे ही चक्कर काट रहा है? हमें परमेश्वर से वास्तव में यह पूछना चाहिए, "मानवजाति के लिए तेरी इच्छा क्या है और मैं उसमें कहां काम आ सकता हूं?" मेरा जीवन, मेरा परिवार, मेरी कलीसिया। उसकी इस इच्छा में क्या भूमिका रखते हैं? पौलुस पतरस से यही कह रहा था, "मसीह तुम में वास करता है। वह दिशानिर्देश देता है। वह अगुआई करता है।" इसका क्या अर्थ है? हम उसके अनुग्रह, मसीह के अनुग्रह को फैलाने के लिए जीवित हैं। यही पद 21 में लिखा है, "मैं परमेश्वर के अनुग्रह को व्यर्थ नहीं ठहराता; क्योंकि यदि व्यवस्था के द्वारा धार्मिकता होती, तो मसीह को मरना व्यर्थ होता।" वह पतरस से स्पष्ट कहता है कि वह अपने व्यवहार द्वारा मसीह के अनुग्रह को शून्य कर रहा है। व्यवस्था पालन परमेश्वर प्राप्ति का मार्ग है तो मसीह की मृत्यु का उद्देश्य व्यर्थ है।

आप मसीह के अनुग्रह को फैलाने के लिए जीवित हैं। दूसरा, आप मसीह के उद्देश्य की पूर्ति करते हैं। पौलुस पतरस से कह रहा है कि वह अपने व्यवहार के कारण अन्यजातियों में सुसमाचार के प्रचार को बधित कर रहा था। यदि हम यह मानते हैं कि मसीह संसार की आशा है और उस आशा को संसार में नहीं सुनाते तो सत्य यह है कि हम मसीह में विश्वास नहीं करते हैं।

हमें आज यह निर्णय लेना है कि हम परमेश्वर की योजना में दर्शक होंगे और अपनी लेशमात्र इच्छाओं, योजनाओं और कार्यों के लिए जीएंगे या मसीह की अनन्त योजना में सहकारी होंगे– जिसमें वह संसार को अपने में आकर्षित करता है। यदि नहीं तो हम मसीह के अन्तर्वास से चूक जाते हैं।

हम मसीह के इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए जीवित हैं और सुसमाचार प्रचार करते हुए ही मरेंगे– उसने हमसे ऐसा प्रेम रखा कि अपने आप को हमारे लिए दे दिया। मसीह मर गया कि हम जीएं। मैं मसीह के

साथ मर गया कि वह मेरे द्वारा जीए। अब मैं नहीं मसीह मुझ में जीवित है। मैं परमेश्वर के पुत्र में विश्वास द्वारा जीवित हूं, जिसने मुझसे प्रेम रखा और मेरे लिए अपनी जान दी। परमेश्वर की इच्छा जानने का कोई सूत्र नहीं है। यह दिन प्रतिदिन उसकी इच्छा में चलना और उसका अनुभव करना है। मेरी यह प्रार्थना है कि परमेश्वर हमें ऐसे व्यक्ति बनाए जो यही चाहते हों, जो अपना सर्वस्व उस पर निछावर कर दें और उसके साथ क्रूस की मृत्यु स्वीकार करें।

हो सकता है कि आप मसीह के अनुयायी नहीं हैं परन्तु आपने इस अध्ययन द्वारा यह तो निश्चय ही देख लिया है कि क्रूस पर क्या विनिमय होता है। आप अपने मन में कह सकते हैं, "मैं इस विनिमय को अपने जीवन की वास्तविकता बनाने के लिए तैयार हूं। मैं उसे अपने पाप देकर उसकी धार्मिकता ग्रहण करने के लिए, अपनी मृत्यु उसे देकर उसका जीवन ग्रहण करने के लिए तैयार हूं।" आज का दिन आपके जीवन का वह दिन हो जब आप पहली बार अपनी पहचान यीशु के साथ बनाते हैं। आमीन!